Did Jesus claim to be God?

क्या यीशु ने परमेश्वर होने का दावा किया?

बहुत से लोग यीशु मसीह को एक महान् मनुष्य या एक महान् भविष्यद्वक्ता मानने की इच्छा करते हैं परन्तु तर्क करते हैं कि यीशु ने परमेश्वर होने का दावा कभी नहीं किया। वे जो यीशु के ईश्वरत्व को नकारते हैं, पवित्र शास्त्र की ओर इंगित करते हैं जो उनके इस मत को सार्थक करता है कि यीशु ने कभी भी परमेश्वर के रूप में आराधना किये जाने की इच्छा प्रकट नहीं की।

हालांकि, प्रमाण तो संकेत करते हैं कि प्रेरितों के समय से यीशु की आराधना प्रभु के रूप में की जाती थी। प्रेरितों की मृत्यु हो जाने के पश्चात् प्रथम और द्वितीय शताब्दी के बहुत से कलीसियाई अगुवों ने यीशु के ईश्वरत्व के विषय में लिखा। अन्ततः 325 ई0 में कलीसिया की अगुवाई ने इस मत को स्पष्ट एवं प्रभावशाली रूप से प्रस्तुत किया कि सम्पूर्ण रीति से यीशु ही परमेश्वर हैं।

कुछ लोग तर्क करते हैं कि कलीसिया ने यीशु के ईश्वरत्व की ''खोज'' सुसमाचार में वर्णित वृतान्तों को पुनः लिखकर की। वास्तव में, विश्व की सर्वाधिक बिकाऊ काल्पनिक पुस्तक द डा विन्सी कोड ने इस दावे को करके 4 करोड़ से अधिक पुस्तकें बेचीं। (देखें ''क्या द डा विन्सी नामक साजिश थी?'') यद्यपि इस पुस्तक ने अपने लेखक डैन ब्राउन को धनी बना दिया, तथापि उसकी काल्पनिक घटनाओं ने खोजियों के द्वारा उसके बुरे इतिहास की पोल खोल दी। वास्तव में नये नियम में उस पर विश्वास किया जा रहा था ''जो प्राचीन इतिहास के प्रमाणों में सर्वाधिक भरोसेमंद (विश्वास योग्य) हो।'' (देखें। ''क्या सुसमाचार सत्य हैं?'')

इस लेख में हम निरीक्षण करेंगें कि यीशु मसीह स्वयं के बारे में क्या कहते हैं। यीशु का इस संदर्भ के द्वारा क्या अर्थ (मतलब) था, '' मनुष्य का पुत्र'', और ''परमेश्वर का पुत्र''? यदि यीशु परमेश्वर नहीं था तो उसके शत्रुओं ने उसे ''धर्म की निन्दा'' करने वाला दोषी क्यों ठहराया? सबसे महत्वपूर्ण बात, कि यदि यीशु परमेश्वर नहीं था, तो उसने आराधना स्वीकार क्यों की?

सर्वप्रथम संक्षिप्त में, देखें कि यीशु मसीह के विषय में मसीहियों का क्या विश्वास है?

सृष्टिकर्त्ता से बढ़ई तक?

मसीहियत का केन्द्रीय बिन्दु यह विश्वास है कि परमेश्वर इस पृथ्वी पर अपने पुत्र यीशु मसीह के शारीरिक रूप में उतर आये। बाइबिल हमें यह सिखाती है कि स्वर्गदूतों के समान यीशु मसीह कोई रचे गये प्राणी नहीं हैं, वरन् इस भूमण्डल के एकमात्र सृष्टिकर्त्ता हैं। जैसे कि

धर्मशास्त्री जे0आई0 पैकर लिखते हैं, ''सुसमाचार हमें बताता है कि हमारा सृष्टिकर्त्ता हमें छुटकारा देने वाला बन चुका है।''[2]

नया नियम इस बात को प्रगट करता है कि अपने पिता की इच्छा के अनुरूप ही, यीशु ने अस्थायी रूप से अपनी सामर्थ्य और महिमा को एक छोटे से असहाय शिशु के रूप को धारण करने के लिये एक ओर हटा दिया था। जैसे–जैसे वह बढ़ता गया, यीशु एक बढ़ई की दुकान में काम करने लगा, भूख का अनुभव किया, थक गया और हमारी तरह मृत्यु और पीड़ा को भोगा। तत्पश्चात् 30 वर्ष की अवस्था में उसने लोगों के बीच अपनी सेवकाई प्रारम्भ की।

एकमात्र परमेश्वर

बइबिल परमेश्वर को सृष्टि के रचियता के रूप में दर्शाती है। वह अनन्त, सनातन, सर्व शक्तिमान, सर्वज्ञानी, व्यक्तिगत, धर्मी, प्रेमी, न्यायी और पवित्र है। उसने अपने स्वरूप में और अपनी इच्छानुसार हमें रचा। बाइबिल के अनुसार परमेश्वर ने हमें बनाया ताकि हम उसके साथ अनन्तकालीन सम्बन्ध बनायें।

जब परमेश्वर ने मसीह से 1500 वर्ष पूर्व मूसा से जलती हुई झाड़ी में बातचीत की, उसने पुनः दृढ़ता से कहा कि वही एकमात्र परमेश्वर है। परमेश्वर ने मूसा को बताया कि उसका नाम याहवे (मै हूँ) है। (हममें से अधिकांश लोग अंग्रेजी अनुवाद यहोवा अथवा प्रभु से अधिक परिचित हैं।[6]) ठीक उसी समय में यहूदी वादियों का बुनियादी धर्मशास्त्र (शीमा) हो चला :

''हे इस्राएल, सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है।'' (व्यवस्था विवरण 6:4)

एकेश्वरवादियों के इस संसार में यह विश्वास है कि यीशु अपने कार्य में लगे रहे, सेवकाई में लगे रहे और इस तरह के दावे करने शुरू कर दिये जिसने उन सब लोगों को हैरत में डाल दिया जिन्होंने उसे सुना और रे स्टैडमैन के अनुसार इब्रानी पवित्रशास्त्र का केन्द्रीय विषय यीशु हैं।

''यहाँ पर जीवित, साँस लेने वाले मनुष्य रूप में एक ऐसा है जो निर्गमन से लेकर मलाकी तक के सभी चिह्नों और भविष्यवाणियों को पूरी करता और उन पर खरा उतरता है। जैसे–जैसे हम पुराने नियम से नये की ओर बढ़ते जाते हैं हम पाते हैं कि नासरत का यीशु, नामक एक ही व्यक्ति दोनों नियमों का केन्द्र बिन्दु है।''[7]

परन्तु यदि यीशु ही पुराने नियम का पूरा होना है तो उसके दावों को इस बात की पुष्टि करनी चाहिये कि ''परमेश्वर ही एक मात्र प्रभु है'' इस बात की शुरूआत के साथ जो उसने स्वयं के लिये कहा। आइये आगे देखें।

परमेश्वर का पवित्र नाम

जब यीशु ने अपनी सेवकाई शुरू की तो उसके आश्चयकर्मों और खरी शिक्षाओं ने तुरन्त ही भारी भीड़ को रोमांच के उन्माद का वातावरण बनाते हुए अपनी ओर खींच लिया। जैसे–जैसे उसकी प्रसिद्धि भीड़ के मध्य फैलती गयी, यहूदी अगुवों (फरीसी, सदूकी और शास्त्री) ने यीशु को एक भय के रूप में देखना शुरू कर दिया। शीघ्र ही वे उसे फँसाने के रास्तों की खोज करने लगे।

एक दिन यीशु मन्दिर में कुछ फरीसियों के साथ तर्क कर रहे थे, जब अचानक से उन्होंने उन्हें बताया कि वह ''जगत की ज्योति हैं।'' इस दृश्य चित्र की यह लगभग हैरतअंगेज बात है जहाँ गलील के निचले स्थान से आया हुआ घुमन्तू बढ़ई धर्म के विषय में उच्च उपधि प्राप्त इन लोगों को बता रहा है कि वह 'जगत् की ज्योति' है'' इस बात में विश्वास रखने के कारण कि यहोवा जगत् की ज्योति है, उन्होंने रूष्ट स्वर में उसे उत्तर दिया।

''तू अपने विषय में झूठे दावे कर रहा है।'' (यूहन्ना 8:13 एनएलटी)

तब यीशु ने उन्हें बताया कि 2000 वर्ष पूर्व इब्राहीम ने उसे देखा था। उनकी प्रतिक्रिया संदेहास्पद थी।

''अब तक तू पचास वर्ष का नहीं। तू कैसे कह सकता है कि तूने इब्राहीम को देखा है? (यूहन्ना 8:58 एन एल टी)

तब यीशु ने उन्हें और अधिक चकित कर दिया :

''सच यह है, इब्राहिम के पहिले, मैं हूँ।'' (यूहन्ना 8:58 एन एल टी) अज्ञात की स्थिति से परे गैर रूढ़िवादी और उन्मुख विचारों वाला यह बढ़ई जिसके पास धर्म की कोई उपाधि नहीं है, अनन्तकाल से होने का दावा कर रहा है। इससे भी कहीं बढ़कर, उसने मैं हूँ (इगो् इमी)[8] नामक अधिकार का इस्तेमाल किया था, जो स्वयं के लिये परमेश्वर का पवित्र नाम है। ये धार्मिक विशेषज्ञ धर्म शास्त्र के उस पुराने नियम जो साबित करता है कि एकमात्र परमेश्वर यहोवा है के मध्य जीते आ रहे थे और साँस लेते आ रहे थे। वे जानते थे कि धर्म शास्त्र यशायाह के द्वारा कहा गया है :

''मैं ही ईश्वर हूँ। मुझसे पहिले कोई ईश्वर न हुआ और न मेरे बाद भी कोई होगा। मैं ही यहोवा हूँ और मुझे छोड़ कोई उद्धारकर्त्ता नहीं।'' (यशायाह 43:10, 11 एन एल टी)

चूँकि ईश्वर की निन्दा करने का दण्ड पत्थर से मार की मृत्यु थी, अतः यहूदी अगुवों ने क्रोधित होकर यीशु को मार डालने के लिये पत्थर उठा लिये। उनका विचार था कि यीशु स्वयं को ''ईश्वर'' कह रहे थे उस क्षण यीशु कह सकते थे, ''रूको! तुम मुझे गलत समझ रहे हो ... .. मैं यहोवा नहीं हूँ।'' परन्तु यीशु ने अपने कहे को नहीं बदला, यहाँ तक कि मार दिये जाने के जोखिम के बाद भी।

लेविस उनके क्रोध की व्याख्या करते हैं।

''वह कहता है ..... मैं एक मात्र परमेश्वर का इकलौता पुत्र हूँ, इब्राहीम से पहिले मैं हूँ और यह याद रहे कि इब्रानी में ''मैं हूँ'' शब्दों का क्या स्थान है। ये परमेश्वर का नाम है, जो किसी भी मनुष्य द्वारा नहीं बोले जाने हैं, वह नाम जिसके बोलने का अर्थ मृत्यु है।''[9]

कुछ लोग इस बात पर तर्क कर सकते हैं कि यह अद्वितीय उदाहरण है। परन्तु यीशु ने बहुतेरे दूसरे अवसरों पर भी स्वयं के लिये ''मैं हूँ'' का इस्तेमाल किया है। आइये इनमें से कुछेक पर दृष्टि करें, इस बात की कल्पना करने का प्रयास करते हुए कि यीशु के इन ठोस दावों को सुनकर हम पर उनकी कैसी प्रतिक्रिया होगी :

- ''जगत की ज्योति मैं हूँ'' (यूहन्ना 8:12)
- ''मार्ग, सच्चाई और जीवन मैं ही हूँ'' (यूहन्ना 14: 6)
- ''पिता तक जाने का एकमात्र मार्ग मैं हूँ'' (यूहन्ना 14: 6)
- ''पुनरूत्थान और जीवन मैं ही हूँ'' (यूहन्ना 11: 25)
- ''अच्छा चरवाहा मैं हूँ'' (यूहन्ना 10: 11)
- ''द्वार मैं हूँ'' (यूहन्ना 10: 9)
- ''जीवन की रोटी मैं हूँ'' (यूहन्ना 6: 51)
- ''सच्ची दाखलता मैं हूँ'' (यूहन्ना 15: 1)
- ''मैं ही अल्फा और ओमिगा हूँ'' (प्रकाशित वाक्य 1:7, 8)

जैसा कि लेविस अवलोकन करते हैं कि यदि ये दावे स्वयं परमेश्वर की ओर से नहीं होते तो अवश्य ही यीशु को पागल करार दे दिया गया होता परन्तु कौन सी ऐसी बातें थीं जिन्होंने यीशु को उनके लिये अद्भुत बनाया जिन्होंने उसे सुना था, ये वे सृजनात्मक आश्चर्यकर्म थे और उसकी ठोस दावे के साथ बतायी गयीं बुद्धिमत्तापूर्ण शिक्षाएं भी जिसे उसने दर्शाया।

मनुष्य का पुत्र

कुछ लोगों का कहना है कि मैं हूँ नामक नाम लेने के अर्थ से यीशु का अभिप्राय यह नहीं था कि वे परमेश्वर हैं। वे इस बात पर तर्क करते हैं कि यीशु ने स्वयं को ''मनुष्य का पुत्र'' रूप

में सम्बोधित किया, जो सिद्ध करता है कि उन्होंने ईश्वरसत्ता का दावा नहीं किया। अतः ''मनुष्य का पुत्र'' नामक पदवी का सार क्या है और इसका क्या अभिप्राय है?

पैकर लिखते है कि ''मनुष्य का पुत्र'' नाम यीशु के पात्र को ऐसे उद्धारकर्त्ता राजा के रूप में सम्बोधित करता है जो यशायाह 53 की मसीहा के सम्बन्ध में की गयी भविष्यवाणी का पूरा करने वाला है।[10] यशायाह 53 आने वाले मसीहा के विषय में भविष्यद्धक्ता की ओर से सर्वाधिक व्यापक एवं विस्तृत अर्थ वाला अवतरण है और स्पष्ट रूप से उसे एक पीड़ा भोगने वाले उद्धारकर्त्ता के रूप में दर्शाता है। स्वयं यशायाह भी मसीह को ''पराक्रमी परमेश्वर'', ''अनन्तकाल का पिता'', ''शांति का राजकुमार'' के रूप में संबोधित कर चुका था (यशायाह 9 : 6)।

इसके अतिरिक्त, बहुत से विद्वानों का कहना है कि यीशु ''मनुष्य के पुत्र'' के विषय में दानिय्येल की भविष्यवाणी के पूरे होने के रूप में स्वयं की ओर संकेत कर रहे थे। दानिय्येल भविष्यवाणी करता है कि ''मनुष्य के पुत्र'' को मनुष्य जाति के ऊपर अधिकार दिया जायेगा और वह आराधना के योग्य ठहरेगा :

''मैंने देखा, और देखो, मनुष्य के सन्तान सा कोई आकाश के बादलों समेत आ रहा था, और वह उस अति प्राचीन के पास पहुँचा, और उसको वे उसके समीप लाए। तब उसको ऐसी प्रभुता, महिमा और राज्य दिया गया, कि देश–देश और जाति–जाति के लोग और भिन्न–भिन्न भाषा बोलने वाले सब उसके अधीन हों।'' (दानिय्येल 7:13, 14)

तो ''मनुष्य का पुत्र'' कौन है और क्यों उसकी आराधना की जाती है जबकि एकमात्र परमेश्वर की ही आराधना की जानी है। यीशु ने अपने चेलों को बताया कि जब वह पृथ्वी पर लौटेंगें, ''तब वे मुनष्य के पुत्र को सामर्थ और बड़ी महिमा के साथ बादल पर आते देखेंगें।'' (लूका 21:27) क्या यीशु यहाँ पर यह कह रहे हैं कि वह दानिय्येल की भविष्यवाणी का पूरा होना हैं?

परमेश्वर का पुत्र

यीशु ने ''परमेश्वर का पुत्र'' होने का भी दावा किया। इस उपाधि का अर्थ यह नहीं है कि यीशु परमेश्वर के जैविक पुत्र थे। न ही शब्द ''पुत्र'' किसी हद तक हीनता की भावना को दर्शाता है कि किसी तुलना में मानव पुत्र बुनियादी गुणों में अपने पिता से तुच्छ होता है। एक पुत्र में अपने पिता का डी0एन0ए0 अंश होता है और यद्यपि वे भिन्न होते हैं परन्तु दोनों मनुष्य होते हैं। विद्वान शास्त्री कहते हैं कि ''परमेश्वर का पुत्र'' शब्द मूल भाषाओं में समानता की ओर अथवा ''ठीक उसी श्रेणी'' की ओर संकेत करता है। इसके द्वारा यीशु का अभिप्राय था कि उनमें ईश्वरीय तत्व हैं अथवा 21वीं शताब्दी के शब्दों में ''परमेश्वर का डी0एन0ए0 अंश''। प्रोफेसर पीटर क्रीफ्ट व्याख्या करते हैं।

''यीशु का क्या अभिप्राय था जब उन्होंने स्वयं को ''परमेश्वर का पुत्र'' कहा? मनुष्य का पुत्र मनुष्य होता है। (''पुत्र'' और ''मनुष्य'' दोनों का पारंपरिक भाषा में अर्थ है कि समान रूप से ''पुरूष'' और ''स्त्रियाँ'') एक वनमानुष का पुत्र वनमानुष होता है। कुत्ते का पुत्र एक कुत्ता होता है। शार्क का पुत्र एक शार्क होता है। और इसीलिये परमेश्वर का पुत्र परमेश्वर है। ''परमेश्वर का पुत्र'' एक ईश्वरीय उपाधि है।''[11]

यूहन्ना 17 में यीशु उस महिमा के विषय में बताते है जिसकी भागेदारी जगत की उत्पत्ति से पूर्व उनके और उनके पिता के मध्य हुई परन्तु क्या स्वयं को ''परमेश्वर का पुत्र'' कहकर यीशु परमेश्वर से समानता का दावा कर रहे हैं? पैकर उत्तर देते हैं :

''अतः जब बाइबिल यीशु को परमेश्वर के पुत्र रूप में घोषित करती है तो कही गयी उन बातों का तात्पर्य उसके अद्वितीय निजी ईश्वरत्व को स्वीकारना है।''[12]

अतः वे नाम जो यीशु ने स्वयं के लिये इस्तेमाल किये इस तथ्य की ओर संकेत करते हैं कि वह परमेश्वर के समतुल्य होने का दावा कर रहे थे। परन्तु क्या यीशु परमेश्वरीय अधिकार के साथ बोले और कार्य किया?

पाप क्षमा करना

यूहदी धर्म में, पापों की क्षमा का गुण सिर्फ परमेश्वर के लिये सुरक्षित था। क्षमा सदैव व्यक्तिगत होती है, कोई दूसरा व्यक्ति पाप करने वाले को क्षमा नहीं कर सकता, विशेष रूप से तब जबकि जिसके प्रति पाप किया गया हो, वह स्वयं परमेश्वर हो। परन्तु बहुत से अवसरों पर पापियों को क्षमा करके यीशु ने ऐसे व्यवहार किया जैसे वह परमेश्वर हों। असंतुष्ट धार्मिक अगुवे अन्ततः तब यीशु पर भड़क उठे जब उन्होंने ठीक उनके सामने झोले के मारे हुए मनुष्य के पाप क्षमा कर दिए।

''वे शास्त्री जो उसे सुनते थे उन्होंने उसे परमेश्वर की निन्दा करने वाला कहा। परमेश्वर को छोड़ और कौन पाप क्षमा कर सकता है'' (मरकुस 2:7)!

लेविस उन सब लोगों को हैरत में डाल देने वाली प्रतिक्रियाओं पर विचार करते हैं जिन्होंने यीशु को सुनाः

तब वास्तविक झटका उत्पन्न होता है', लेविस लिखते हैं : 'इन यहूदियों के मध्य तब एकाएक एक ऐसा मनुष्य उठ खड़ा होता है जिसकी बातों से प्रतीत होता है जैसे कि वह स्वयं परमेश्वर हो। वह पापों को क्षमा करने का दावा करता है। वह कहता है कि वह सर्वदा से है। वह कहता है कि अन्त के समय में वह इस संसार का न्याय करने को आने वाला है। अब हमें इस

बात को स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिये। भारतीयों के समान, सर्वेश्वरवादियों के मध्य, कोई भी कह सकता है कि वह परमेश्वर का अंश थे, अथवा एक व्यक्ति जो परमेश्वर के साथ है .... परन्तु यह मनुष्य, क्योंकि वह एक यहूदी था, उस तरह का परमेश्वर नहीं हो सकता। उनकी भाषा में परमेश्वर का अर्थ है कि एक ऐसा अस्तित्व जो संसार के परे है, जिसने इसे रचा था और जो किसी भी दूसरे से अनन्त रूप में अतुलनीय है और जब आपने इस बात को समाहित कर लिया है, आप देखेंगे कि जो कुछ इस मनुष्य ने कहा, बहुत ही सामान्य रूप से, सर्वाधिक चकित कर देने वाली ऐसी बात है जो कभी ही मनुष्य के होठों से निकली होगी।''[13]

परमेश्वर संग एक होने का अधिकार जताना

जिन लोगों ने यीशु को सुना, उनने उनकी नैतिक सिद्धता को पाया और उन्हें आश्चर्यकर्म करते देखा, हैरत में पड़ गये कि क्या वही बहुत पहले किये गये वायदे के अनुसार मसीहा हैं। अन्ततः उनके विरोधियों ने उन्हें मन्दिर में घेर लिया और पूछने लगे :

''तू हमारे मन को कब तक दुविधा में रखेगा? यदि तू मसीह है, तो हमसे साफ कह दे।''

यीशु ने उत्तर दिया, ''जो काम मैं अपने पिता के नाम से करता हूँ वे ही मेरे गवाह हैं।'' अपने पीछे चलने वालों की तुलना उन्होंने भेड़ से करते हुए कहा, ''मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ, और वे कभी नाश न होंगी'' तब उन्होंने उन पर यह बात प्रगट की कि ''पिता सब से बड़ा है'', और यह कि उसके कार्य ''पिता की ओर से हैं।'' यीशु की दीनता में अवश्य ही मैत्रीपूर्ण भावना रही होगी। परन्तु तभी यीशु ने सनसनीखेज रूप से किसी बम के गोले को जैसे उनसे यह कहकर टपका दिया, (यूहन्ना 10:25–30)

''मैं और पिता एक हैं।''

यदि यीशु का यह अभिप्राय रहा होता कि उनका परमेश्वर से एक समझौता मात्र है, तो संभवतः वहाँ कोई तीव्र प्रतिक्रिया न रही होती परन्तु यहूदियों ने उसे पत्थरवाह करने को फिर से पत्थर उठाए। इस पर यीशु ने उनसे कहा, ''कि मैंने तुम्हें अपने पिता की ओर से बहुत से भले काम दिखाएं हैं, उन में से किस काम के लिये तुम मुझे पत्थरवाह करते हो?''

उन्होंने उसे उत्तर दिया, ''कि भले काम के लिये हम तुझे पत्थरवाह नहीं करते, परन्तु परमेश्वर की निन्दा के कारण और इसलिये कि तू मनुष्य होकर अपने आपको परमेश्वर बनाता है।'' (यूहन्ना 10:33)

जबकि यीशु अपने चेलों को अपनी क्रूस पर होने वाली आगामी मृत्यु और प्रस्थान के बारे में तैयार कर रहे थे, थोमा जानना चाहता था कि वह कहाँ जा रहे हैं और वहां जाने का मार्ग क्या है। यीशु ने थोमा को उत्तर दिया :

''मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूँ, बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता। यदि तुम ने मुझे जाना होता, तो मेरे पिता को भी जानते, और अब उसे जानते हो, और उसे देखा भी है।'' (यूहन्ना 14:5–9)

वे दुविधा में थे। तब फिलिप्पुस ने यीशु से यह पूछकर ''हमें पिता को दिखा दे'' बोलना शुरू किया। यीशु फिलिप्पुस को इन चौंका देने वाले शब्दों के साथ उत्तर देते हैं :

''हे फिलिप्पुस, मैं इतने दिन से तुम्हारे साथ हूँ, और क्या तू मुझे नहीं जानता? जिस ने मुझे देखा है उस ने पिता को देखा है।

'' प्रभावी रूप से यीशु कह रहे थे, ''फिलिप्पुस यदि तू पिता को देखना चाहता है तो मुझ पर दृष्टि कर!''

यूहन्ना 17 में यीशु इस बात को प्रकट करते हैं कि अपने पिता के साथ उनका यह एकीकरण अनन्तकाल की सीमा से कहीं परे पहले से ही विद्यमान रहा था ''जगत् की उत्पत्ति से पूर्व''। यीशु के अनुसार कोई भी पल ऐसा न रहा था जब उन्होंने परमेश्वर की भरपूर महिमा और सम्पूर्णता के विषय में न कहा हो।

परमेश्वर का अधिकार

यूहदी सर्वदा से परमेश्वर का आदर सर्वोच्च अधिकारी के रूप में करते आ रहे थे। रोमियों के अधीन यरूशलेम में अधिकार भली भाँति समझा जाने वाला एक शब्द था। उस समय, सीज़र की राजाज्ञा क्षण भर में युद्ध में एक विशाल सेना को उतार सकती थी, अपराधियों को दण्ड की आज्ञा अथवा दण्ड से बरी कर सकती थी और सरकारी नियमों और कानूनों का निर्धारण कर सकती थी।

पृथ्वी को छोड़ने से पूर्व ही, यीशु ने अपने अधिकार क्षेत्र का वर्णन कर दिया था

''यीशु ने कहा, 'स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है'' (मत्ती 28:18 एनएलटी)

इन अद्भुत शब्दों में, यीशु सर्वश्रेष्ठ अधिकारी होने का दावा कर रहे हैं, न सिर्फ पृथ्वी पर बल्कि स्वर्ग में भी। जॉन पाइपर टिप्पणी करते हैं,

''इसी कारण से यीशु के मित्र और शुत्र वह जो कुछ कहता और करता था उससे बार–बार हैरत में पड़ जाते थे। वह किसी भी मनुष्य के समान सड़क पर जा रहा होगा, और वह मुड़कर कुछ ऐसा कहता होगा, ''इब्राहीम से पहले मैं हूँ'' अथवा ''यदि तुमने मुझे देखा है, तो तुमने पिता को देखा है'' अथवा अत्यधिक शांति से, ईश्वर की निन्दा किये जाने का दोष लगाने के पश्चात् वह कहता होगा, 'मनुष्य के पुत्र को इस पृथ्वी पर पापों को क्षमा करने का अधिकार है' मृतकों से उसने साधारण तरीके से कहा होगा, 'बाहर निकल आ' अथवा 'उठ खड़ा हो' और उन्होंने आज्ञा का पालन किया होगा। समुद्र पर के तूफ़ान से वह कहता होगा, 'शांत हो जा' और रोटी के टुकड़े से वह कहता होगा, 'हजारों का भोजन बन जा' और तुरन्त ही ऐसा हो गया।''[14]

कुछ लोग इस बात पर अवश्य तर्क कर सकते हैं कि जबकि अधिकार की बात उसके पिता की ओर से थी, यीशु का परमेश्वर होने के कारण इससे कोई सम्बन्ध नहीं था। परन्तु परमेश्वर की ओर से कभी भी किसी भी रचे गये प्राणी को इस रीति से अधिकार नहीं मिलता कि उनको ईश्वर तुल्य माना जाये। ऐसा करना उसकी आज्ञा का उल्लंघन करना होगा।

भक्ति स्वीकार करना

इब्रानी पवित्र शास्त्र के लिये इस तथ्य से बढ़कर कोई मूल बात नहीं है कि एकमात्र परमेश्वर ही भक्ति के योग्य है। वास्तव में, दस आज्ञाओं में से पहली आज्ञा है,

''तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना'' (निर्गमन 20:3 एन एल टी)

अतः सबसे भयंकर पाप जो एक यहूदी कर सकता था वह था या तो किसी अन्य प्राणी की परमेश्वर के समान भक्ति करना अथवा भक्ति को ग्रहण करना। अतः यदि यीशु परमेश्वर नहीं हैं, तो भक्ति को ग्रहण करना ईश्वर की निन्दा करना होगा।

यीशु के जी उठने के बाद, चेलों ने थोमा को बताया कि उन्होंने प्रभु को जीवित देखा है (यूहन्ना 20:24–29) तब उसे व्यंग्यात्मक लहजे में उसने यह बताते हुए कहा कि वह केवल तभी प्रतीति करेगा जब वह यीशु के हाथों के कीलों के घाव भरे छेदों में और उसके छेदे गये पंजर में अपनी ऊँगली डाल सके। आठ दिन बाद चेले फिर से एक घर के भीतर इकट्ठे थे जब यीशु एकाएक उनके बीच में आ खड़ा हुआ। यीशु ने थोमा की ओर देखा और उससे कहा, ''अपनी ऊँगली यहाँ लाकर मेरे हाथों को देख और अपना हाथ लाकर मेरे पंजर में डाल।''

थोमा को और अधिक प्रमाण की आवश्यकता नहीं थी। उसने तुरन्त ही यीशु को यह सम्बोधित कर विश्वास कियाः ''हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर!''

थोमा ने यीशु को परमेश्वर जानकर उसकी भक्ति की। यदि यीशु परमेश्वर न होते तो निश्चय ही उन्हें उसी क्षण उसी स्थान पर थोमा को कड़ी फटकार लगा देना चाहिये था। परन्तु फटकार के स्थान पर थोमा द्वारा उनको परमेश्वर सी भक्ति दिये जाने के कारण यीशु ने यह कहकर उसकी प्रशंसा की :

''तू ने तो मुझे देखकर विश्वास किया है, धन्य वे हैं जिन्होंने मुझे बिना देखे विश्वास किया।''

यीशु ने गणना किये गये नौ अवसरों पर भक्ति को स्वीकार किया। यहूदी मत के संदर्भ में, यीशु की भक्ति को स्वीकारना ईश्वरत्व के विषय में उनके द्वारा किये गये दावे को चिल्ला–चिल्ला कर कहता है। परन्तु यह बात ऐसी नहीं थी जिसे उनके चेलों ने पूर्णतया समझ लिया हो जब तक कि यीशु स्वर्ग में न उठा लिये गये। यीशु के पृथ्वी पर जाने से पूर्व, उन्होंने अपने चेलों को, ''पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से नये चेलों को बपतिस्मा देने को कहा'' (मत्ती 28:19) स्वयं और पवित्रात्मा दोनों को पिता की समानता में समान स्तर पर रखते हुए।[15]

अल्फा और ओमिगा

जबकि प्रेरित यूहन्ना पतमुस के टापू पर निर्वासन की कैद में था, यीशु ने एक दर्शन में उस पर उन घटनाओं को प्रगट किया जो अंत के दिनों में घटेंगी। दर्शन में, यूहन्ना निम्नलिखित अद्भुत दृश्य का वर्णन करता है :

''देखो, वह बादलों के साथ आने वाला है; और हर एक आँख उसे देखेगी, वरन जिन्होंने उसे बेधा था, ... प्रभु परमेश्वर वह जो है, और जो था, और जो आने वाला है; जो सर्वशक्तिमान है : यह कहता है, कि मैं ही अल्फा और ओमिगा हूँ ..... (आदि और अन्त)।''

अतः यह व्यक्ति कौन है जो ''अल्फा और ओमिगा'', ''प्रभु परमेश्वर'', ''सर्वशक्तिमान'' कहलाता है? हमें बताया गया है कि उसे ''बेधा'' गया था। जो इस बात को स्पष्ट करता है कि अल्फा और ओमिगा यीशु हैं। यही वह एकमात्र हैं जिन्हें क्रूस पर बेधा गया था।

यूहन्ना, जो किसी अन्य चेले से कहीं अधिक यीशु के निकट था, उस व्यक्ति की छाया देखता है जो उससे बोल रहा है, वह लिखता है :

''और उन दीवटों के बीच में मनुष्य के पुत्र सरीखा एक पुरूष को देखा ..... उसके सिर और बाल श्वेत ऊन बरन पाले के से उज्जवल थे; और उस की आँखें आग की ज्वाला की नाईं थीं ..... और उसका मुंह ऐसा प्रज्वलित था, जैसा सूर्य कड़ी धूप के समय चमकता है।'' (प्रकाशित वा0 1:13, 14, 16 ब)

यूहन्ना की भावनाओं को समझ पाना असम्भव है जबकि वह ऐसे पुरूष को देखता है जो ऐसा प्रज्वलित है जैसा सूर्य अपनी चरम सीमा पर, जिसकी आँखें आग की ज्वाला के समान हैं। जिसे उसने देखा था, उसके पैरों पर वह तुरन्त मुर्दे के समान गिर पड़ता है। यदि यह यीशु थे, तो यूहन्ना उन्हें पहचान क्यों न पाया? संभवतः उसने सोचा हो कि यह कोई स्वर्गदूत था। आइये यूहन्ना के शब्दों को सुनें।

''उसने मुझ पर अपना दहिना हाथ रखकर यह कहा, कि मत डर; मैं प्रथम और अन्तिम और जीवता हूँ। मैं मर गया था, और अब देख; मैं युगानुयुग जीवता हूँ।'' (प्रकाशित वा0 1:17)!

वह जो यूहन्ना से बाते कर रहा है, अपनी पह्चान ''प्रथम और अन्तिम'' के रूप में कराता है, अपनी अनन्तता के प्रति स्पष्ट संदर्भ और चूंकि एकमात्र परमेश्वर ही अनन्त है, इसे अवश्य ही परमेश्वर होना चाहिये। परन्तु उसी वाक्य में वह यूहन्ना को बताता है कि वह वोह ''जीवता है जो मर गया था।'' अतः हम जानते हैं कि यह परमेश्वर पिता नहीं हो सकता क्योंकि पिता ने कभी मनुष्य के समान मृत्यु को नहीं भोगा।

''फिर मैंने एक बड़ा श्वेत सिंहासन और उसको जो उस पर बैठा हुआ है, देखा..... और जो सिंहासन पर बैठा हुआ था उसने कहा ..... ''मैं अल्फा और ओमिगा.... आदि और अन्त हूँ।'' (प्रकाशित वाक्य 20:11, 21:6)

यह प्रभु यीशु मसीह ही हैं जो बड़े श्वेत सिंहासन पर राज करते हैं। यीशु ने पहले से ही अपने चेलों को बता दिया था कि वे मनुष्य के अन्तिम न्यायी होंगे। उन्होंने प्रतिज्ञा की थी जो उसमें विश्वास रखते हैं वे पाप के न्याय के दिन बचाए जायेंगे, परन्तु जो उसे ग्रहण नहीं करते उनका न्याय किया जायेगा।

निष्कर्ष

अतः क्या यीशु ने परमेश्वर होने का दावा किया था या फिर सामान्य रूप से वह गलत समझे गये। आइये हम यीशु के दावों पर एक और दृष्टि डालें और पूछें: यदि वह परमेश्वर नहीं थे तो क्या यीशु ने ऐसे ठोस दावे किये?

- ❖ यीशु ने परमेश्वर का नाम स्वयं के लिये इस्तेमाल किया
- ❖ यीशु ने स्वयं को ''मनुष्य का पुत्र'' कहा
- ❖ यीशु ने स्वयं को ''परमेश्वर का पुत्र'' कहा

- ❖ यीशु ने पाप क्षमा करने का दावा किया
- ❖ यीशु ने परमेश्वर संग एक होने का दावा किया
- ❖ यीशु ने सब बातों पर अधिकार होने का दावा किया
- ❖ यीशु ने आराधना को स्वीकार किया
- ❖ यीशु ने स्वयं को ''अल्फा और ओमिगा'' कहा

कुछ लोग अवश्य कहेंगे, ''हम यीशु के दावों पर कैसे विश्वास कर सकते हैं? उन्होंने क्या प्रमाण छोड़े हैं?''

उनके क्रूस पर चढ़ाये जाने के तीन दिन पश्चात्, उनके चेलों ने दावा किया कि उन्होंने उसे जीवित देखा है। यदि उनकी कहानी एक मजाक थी, तो वह समाप्त हो चुकी होती क्योंकि रोमियों ने उन्हे मनुष्यों के बीच दी जाने वाली सबसे भयावाह यातना दिये जाने को सौंप दिया था। परन्तु उनके दृढ़ विश्वास और निष्कपटता ने रोम को जीत लिया और हमारे संसार को परिवर्तित कर दिया (देखें ''क्या यीशु मृतकों में से जी उठे?'') लेविस उनके दृढ़ विश्वास के कारण को स्पष्ट करते हैं:

''समस्त अंतरिक्ष और काल के परे क्या है, क्या है जो रचा नहीं गया, अनन्तकालीन है, प्राकृतिक रूप से जन्मा, स्वयं की सृष्टि में नीचे उतारा गया और पुनः जी उठा।''[16]

वास्तव में पहले तो इस प्रतिभाशाली विद्वान ने यीशु को काल्पनिक समझा था, काफी हद तक प्राचीन यूनान और रोम में मनुष्यों द्वारा गढ़े गये देवताओं के समान। परन्तु ज्यों ही उसने यीशु मसीह के होने के विषय के प्रमाणों की खोज–बीन प्रारम्भ की तो उसने महसूस किया कि नये नियम में यीशु मसीह से सम्बन्धित घटनाओं का जो वर्णन है वो ठोस, ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित है। यह पूर्वकालीन प्रमाणों के आधार पर विश्वास करने वाला यीशु मसीह के होने के प्रमाणों से सम्बन्धित अपनी खोजबीन का अन्त इन विचारों के साथ करता है।

''आपको अपनी ओर से अवश्य ही चुनाव करना है या तो यह मनुष्य परमेश्वर का पुत्र था और है और या तो पागल मनुष्य अथवा कुछ ऐसा है जिसमें खराबी है.... परन्तु हमें उसके एक श्रेष्ठ मानव शिक्षक होने की बातों को किसी सारहीन बात की सरपरस्ती के कारण त्याग नहीं देना है। उसने ऐसा कुछ भी हमारे लिये नहीं छोड़ा है जो आलोचनात्मक हो।''[17]

लेविस ने इस बात की खोज कर ली कि यीशु के साथ उसके व्यक्तिगत सम्बन्ध ने उसके जीवन को अर्थ, उद्देश्य और आनन्द प्रदान किया जिन्होंने उसके सारे स्वप्नों को अद्वितीय रूप प्रदान किया। उसे अपने चुनाव पर कभी खेद नहीं हुआ और वह यीशु मसीह के विषय में बताने वालों का अगुवा ठहरा। आपके बारे में क्या? कया आपने अपना चुनाव कर लिया है?

अनुसूची

1 रवि जकर्याज़, जीसस अमंग अदर गॉडस् (नैशाविल :वर्ड, 2000), 38

2 जे0आई0 पैकर, नोइंग गॉड (डोनर्स ग्रूव, आई एल : इण्टरवर्सिटी, 1993), 189

3 जॉर्ज ए0 बार्टन, जीसस ऑफ नाज़रथ (न्यूयॉर्क : मैकमिलन, 1931), 395

4 जकर्याज़, 89

5 सी0एस0 लेविस, गॉड इन द डॉक (ग्रैंड रैपिड्स, एम0आई0 : र्डमान्स, 2000), 157, 158

6 इब्रानी पवित्र शास्त्र कभी–कभी एक अतिरिक्त शब्द याहवे (यहोवा) के साथ मनुष्यों के प्रति परमेश्वर की पारस्परिकता को प्रभावी रूप से दर्शाने के लिये जुड़ जाता है। ''याहवे इलोहिम'' और ''अदोनाई याहवे'' का अनुवाद ''प्रभु परमेश्वर'' किया गया है और ''याहवे सबाहीत'' का अनुवाद ''सेनाओं का परमेश्वर'' किया गया है। (सी0आई0 स्कोफील्ड, द स्कोफील्ड रेफरेन्स बाइबिल) (न्यूयॉक : ऑक्सफोर्ड, यूनिवर्सिटी प्रेस, 1996), 6, 983.

7 रे0 सी0 स्टैडमैन, एडवेंचरिंग थ्रू द बाइबिल (ग्रैंड रैपिड्स, एम आई : डिस्कवरी हाउस, 1997), 479

8 इगो इमि उस इब्रानी नाम के समतुल्य यूनानी नाम है जिसका प्रयोग यशायाह ने यशायाह 43:10, 11 में परमेश्वर का वर्णन करने के लिये किया था। डॉ0 जेम्स व्हाइट टिप्पणी करते हैं, यूहन्ना द्वारा इगो इमी के प्रयोग और पुराने नियम के मध्य सबसे नज़दीकी और सर्वाधिक तर्कपूर्ण सम्बन्ध सत्तर से अस्सी वर्ष की अवस्था वाले लोगों द्वारा एक विशेष इब्रानी कहावत एनी हू का दूसरी भाषा में अनुवाद के रूप में यशायाह की लेखनियों (प्राथमिक) में पाया जाना चाहिये। 70 से 80 वर्ष की अवस्था वाले ये लोग इब्रानी कहावत एनी हू का अनुवाद इगो इमी के रूप में यशायाह 41 :4, 43:10 और 46:4 में करते हैं।'' (http://www.aomin.org/EGohtml)

9 लेविस, 157

10 पैकर, 198

11 व्हाई आई एम ए क्रिश्चियन, नॉर्मन एल0 जैसलर, पॉल के0 हॉफमैन, ईड्स, ''व्हाई आई बिलीव जीसस इज़ द सन् ऑफ गॉड'' (ग्रैंड रैपिड्स, एम आई : बेकर बुक्स, 2001), 223.

12 पैकर, 57

13 सी0एल0 लेविस, मीर क्रिश्चियनिटी (सैन फ्रांसिस्कोः हार्पर कॉलिन्स, 1972), 51.

14 जॉन पाइपर, द प्लैजर ऑफ गॉड (सिस्टर्स, ओ आर : मुल्ट्नोमाह, 2000), 35

15 मसीही विश्वास करते हैं कि केवल एक ही परमेश्वर है जो तीन भिन्न, समान व्यक्तित्वों में पाया जाता है : पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा (त्रिएकता) कोई भी सांसारिक समानता संतोषजनक रूप से इसकी व्याख्या नहीं कर सकती कि किस रीति से एक परमेश्वर तीन व्यक्तित्वों के रूप में पाया जा सकता है। यद्यपि दो वैज्ञानिक उदाहरण इस बात को दर्शाते हैं कि एक ही तत्व अनेकों रूपों में पाया जा सकता है। 1. प्रकाश दो रूपों में

पाया जाता है, प्रकृति में तरंग और कण दोनों में रूप से प्रकट होता है। 2. H_2O अणु एक ही तत्व है, तब भी भाप, जल और बर्फ के रूप में पाया जाता है। बाइबिल का परमेश्वर, हालांकि असीमित, अनन्तकालीन, अपरिवर्तनीय, सर्वज्ञाता सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान होने के कारण हमारे समझने की पूरी क्षमता के परे है।

16 लेविस, गॉड इन द डॉक, 80.

17 लेविस, मीर क्रिश्चियनिटी, 52.